श्री काली प्रत्यंगिरा स्तोत्र

इस स्तोत्र की रचना श्री अंगिरा ऋषि ने मारण हेतु की थी। इसका प्रयोग कभी निष्फल नहीं होता। अच्छी संख्या में जप हो जाने पर इसे लिखकर दायीं भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने से शत्रुओं का नाश होता है। समस्त अनिष्ट ग्रहों की शांति, दुष्टों का मर्दन करने तथा समस्त पापों का नाश करने में यह स्तोत्र अति उत्तम माना जाता है।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर अमावस्या की रात्रि तक यदि प्रतिदिन इसके एक हजार की सख्या में पाठ किये जाये तो सहज ही शत्रु पक्ष का विलय हो जाता है।

विनियोग :- ॐ ॐ ॐ अस्य श्री प्रत्यंगिरा मन्त्रस्य श्री अंगिरा ऋषिः, अनुष्टुप छंदः, श्री प्रत्यंगिरा देवता, हूं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये पाठे विनियोगः।

अंगन्यासः- श्री अंगिरा ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे ।
श्री प्रत्यंगिरा देवतायै नमः हृदि।
हूं बीजाय नमः गुह्ये ।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
क्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे। ममाभीष्ट सिद्धये पाठे विनियोगाय नमः अंजलौ।

ध्यान

भुजैश्-चतुर्भि-र्धृत तीक्ष्ण बाण,
धनुर्वरा-भीश्च शवांघ्रि युग्मा।
रक्ताम्बरा रक्त तनस्त्रि-नेत्रा,
प्रत्यंगिरेयं प्रणतं पुनातु ।।

स्तोत्र

ॐ नमः सहस्र सूर्येक्षणाय श्रीकण्ठानादि रूपाय पुरूषाय पुरू हुताय ऐं महा सुखय व्यापिने महेश्वराय जगत सृष्टि कारिणे ईशानाय सर्व व्यापिने महा घोराति घोराय ॐ ॐ ॐ प्रभावं दर्शय दर्शय। ॐ ॐ ॐ हिल हिल ॐ ॐ ॐ विद्युतज्जिव्हे बन्ध-बन्ध मथ-मथ प्रमथ-प्रमथ विध्वंसय-विध्वंसय ग्रस-ग्रस पिव-पिव नाशय-नाशय त्रासय-त्रासय विदारय-विदारय मम शत्रून खाहि-खाहि मारय-मारय मां सपरिवारं रक्ष-रक्ष कर कुम्भस्तनि सर्वापद्र-वेभ्यः।

ॐ महा मेघौघ राशि सम्वर्तक विद्युदन्त कपर्दिनि दिव्य कनकाम्भो-रूहविकच माला धारिणि परमेश्वरी प्रिये! छिन्धि-छिन्धि विद्रावय-विद्रावय देवि! पिशाच नागासुर गरूड किन्नर विद्याधर गन्धर्व यक्ष राक्षस लोकपालान् स्तम्भय-स्तम्भय कीलय-कीलय घातय-घातय विश्वमूर्ति महा तेजसे ॐ हूं सः मम शत्रूणां विद्यां स्तम्भय-स्तम्भय, ॐ हूं सः मम शत्रूणां मुखं स्तम्भय-स्तम्भय, ॐ हूं सः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय-स्तम्भय, ॐ हूं सः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय-स्तम्भय, ॐ हूं सः मम शत्रूणां गृहागत कुटुम्ब मुखानि स्तम्भय-स्तम्भय, स्थानं कीलय-कीलय ग्रामं कीलय-कीलय मण्डलं

कीलय-कीलय देशं कीलय-कीलय सर्वसिद्धि महाभागे! धारकस्य सपरिवारस्य शान्तिं कुरू-कुरू फट् स्वाहा ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अं अं अं अं अं हूं हूं हूं हूं हूं खं खं खं खं खं फट् स्वाहा। जय प्रत्यंगिरे! धारकस्य सपरिवारस्य मम रक्षां कुरू-कुरू ॐ हूं सः जय जय स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्माणि ! शिरो रक्ष-रक्ष, हूं स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कौमारि! मम वक्त्रं रक्ष-रक्ष, हूं स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैष्णवि! मम कण्ठं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नारसिंहि! ममोदरं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्राणि! मम नाभिं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डे! मम गुह्यं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ॐ नमो भगवति, उच्छिष्ट चाण्डालिनि, त्रिशूल वज्रांकुशधरे मांस भक्षिणि, खट्वांग कपाल वज्रांसि-धारिणि! दह-दह, धम-धम, सर्व दुष्टान् ग्रस-ग्रस, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

About The Author

Name :- **Shri Yogeshwaranand Ji**
Mb :- **+919917325788**
Email ;- **shaktisadhna@yahoo.com**

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

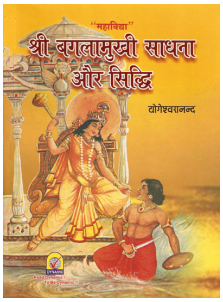

Download

http://www.scribd.com/doc/10935894/Baglamukhi-Sadhna-Aur-Siddhi

2. **Mantra Sadhna**

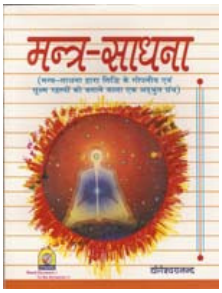

Download

http://www.scribd.com/doc/12594252/Mantra

3. **Shodashi Mahavidya**

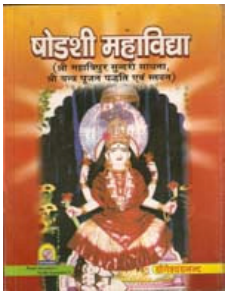

Download

http://www.scribd.com/doc/16314718/tripursundari-sadhna